डॉ० संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

भाषा विज्ञान

→ वैदिक ऋषियों ने सर्वप्रथम ऋग्वेद में वाग्-सूक्त के 8 मंत्रों में भाषा / भाषा विज्ञान को प्रतिपादित किया है। 'वाक्' तत्व = भाषा ही वह दिव्य ज्योति है जो मानव को ऋषि देवता या विद्वान् बनाती है। वस्तुतः मानव अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए जिस सार्थक मौखिक माध्यम का उपयोग करता है, वही 'भाषा' कहलाती है। यद्यपि संकेत आदि के द्वारा भी भावों की अभिव्यक्ति की जाती है। किन्तु अपने भावों एवं विचारों को स्पष्ट करने का माध्यम भाषा ही है। भाषा ही वह श्रेष्ठ माध्यम है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से सम्बन्ध स्थापित करता है। भाषा मानव जीवन की प्राचीनतम उपलब्धि है। भाषा की सर्वोत्कृष्टता को स्पष्ट करते हुए व्याकरण महाभाष्य में पतञ्जलि लिखते हैं ——

"एक : शब्दः सम्यक् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गलोके कामधुक् भवति।
दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह॥"

इससे स्पष्ट होता है कि व्यावहारिक दृष्टि से भाषा की कितनी उपयोगिता है। भाषा के महत्त्व को स्वीकार करते हुए अनेक जिज्ञासाएँ मानव

मन में प्रकट होती है कि भाषा क्या है? भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई है? इसका निर्माण किस प्रकार होता है? इस प्रयोग किस प्रकार होता है? इसके कौन-कौन से अवयव है, इसको किस प्रकार उच्चारित किया जाता है? इत्यादि।

भाषा-विज्ञान भाषा-विषयक सभी जिज्ञासाओं का समाधान प्रस्तुत करता है। भाषा विज्ञान का सम्बन्ध संसार की सम्पूर्ण भाषाओं से है। अतः यह विश्व की समस्त भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

नामकरण

भाषा विज्ञान मुख्य रूप से पाश्चात्य विद्वानों की देन है। प्राचीनकाल में भारतीय विद्वान भाषा विज्ञान को शिक्षा, निरुक्त, व्याकरण, प्रातिशाख्य आदि नाम से सम्बोधित करते थे। पाश्चात्य विद्वानों ने सर्वप्रथम भाषा के तुलनात्मक अध्ययन को फिलोलॉजी (Philology) नाम दिया था। अंग्रेजी में इसके लिए साइंस ऑफ लेंग्वेज कहा जाने लगा। जो कालांतर में अधिक प्रचलित हुआ। परन्तु वर्तमान समय में भाषा-विज्ञान, भाषा-शास्त्र, तुलनात्मक भाषा शास्त्र, शब्द शास्त्र भाषिकी आदि शब्द प्रचलित है। इनमें से

भाषा विज्ञान तथा भाषा शास्त्र अधिक प्रचलित नाम है।

भाषा विज्ञान की परिभाषा

भाषा-विज्ञान उस शास्त्र को कहते हैं, जिसमें भाषा का वैज्ञानिक और विवेचनात्मक अध्ययन किया जाता है। नाम से ही स्पष्ट है कि 'भाषा का विज्ञान' = भाषा: विज्ञानं भाषाविज्ञानम्'। भाषा विज्ञान दो शब्दों भाषा एवं विज्ञान का संयुक्त रूप है। भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष व्यक्तायां वाचि' धातु से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है - स्पष्ट वाणी। तथा विशिष्ट ज्ञान को विज्ञान कहते हैं।

'भाषा विज्ञान' की भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने अनेक परिभाषाएँ दी हैं जो निम्न हैं —

⇒ डा० पी० डी० गुणे के अनुसार — भाषा विज्ञान Science of language है जिसमें विश्व की समस्त भाषाओं के विभिन्न वर्गों का अध्ययन किया जाता है।

अतः तुलनात्मक भाषा विज्ञान या केवल भाषा विज्ञान 'भाषा का विज्ञान' है। यथार्थतः फिलॉलोजी शब्द का अर्थ किसी भाषा का साहित्यिक दृष्टि से अध्ययन है — Comparative Philology or simply Philology is the Science of language. Philology strictly the study of a language from the literary point of view.

⇒ डॉ० श्यामसुन्दर दास के अनुसार – "भाषा विज्ञान भाषा की उत्पत्ति, उसकी बनावट उसके विकास तथा उसके ह्रास की वैज्ञानिक व्याख्या करता है।

⇒ डॉ० मंगलदेव शास्त्री के अनुसार – "भाषा विज्ञान उस विज्ञान को कहते हैं जिसमें सामान्य रूप से मानवीय भाषा का किसी विशेष भाषा की रचना और इतिहास का और अन्ततः भाषाओं प्रादेशिक भाषाओं या बोलियों के वर्गों की पारस्परिक समानताओं और विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

⇒ डा० भोलानाथ तिवारी के अनुसार – जिस विज्ञान के अन्तर्गत ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन की सहायता से भाषा की उत्पत्ति, गठन, प्रकृति एवं विकास आदि की सम्यक् व्याख्या करते हुए इन सभी के विषय में सिद्धान्तों का निर्धारण हो, उसे भाषा विज्ञान कहते हैं।

⇒ डॉ० बाबूराम सक्सेना के अनुसार – भाषातत्वों का अध्ययन भाषा विज्ञान का अध्ययन है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'भाषा विज्ञान' वह विज्ञान है, जिसमें भाषा का सर्वांगीण विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है।

—x—